Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वप्नवासवदत्तम् में पात्रों के नैतिक आदर्श मूल्यों का अध्ययन

रमेश कुमार मेघवाल*

* सहायक आचार्य (संस्कृत) राजकीय महाविद्यालय, आहोर (जालोर) (राज.) भारत

शोध सारांश – नाटककार भास के द्वारा रचित 'स्वप्नवासदत्तम्' नाटक छः अंको का है। इस नाटक में वत्सराज उदयन, राजकुमारी वासवदत्ता और राजकुमारी पद्मावती की रोचक कथा का वर्णन तथा वत्सराज उदयन और वासवदत्ता की स्वप्न में मिलने की रोचक घटना वर्णित है। इसी कारण इसका नाम 'स्वप्नवासदत्तम्' है। वत्सराज उदयन का विवाह राजकुमारी वासवदत्ता से होने के बाद वे राज्य कार्य पर ध्यान नहीं देते है और इस अवसर का लाभ उठाकर उनका शत्रु आरुणि राज्य के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लेता है। तब प्रधान अमात्य यौगन्धरायण राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए वासवदत्ता और स्वयं के जलकर मरने की मिथ्या बात फैलाकर, मगध नरेश की बहिन पद्मावती से राजा उदयन के विवाह की योजना बनाते है। यौगन्धरायण वासवदत्ता को अपनी बहिन बताकर राजकुमारी पद्मावती के पास धरोहर के रूप में रख देते है। उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है तो उनकी स्मृति ताजा हो जाती है। तदनन्तर राजा उदयन का राजकुमारी पद्मावती के साथ विवाह हो जाता है। मगध नरेश की सहायता से राजा उदयन अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लेते है, फिर वासवदत्ता और उदयन का पुनर्मिलन होता है। वत्सराज उदयन वासवदत्ता और पद्मावती के साथ सहर्ष राजधानी लौट जाते है। नाटककार भास ने पात्रों के चरित्र–चित्रण में आदर्श नैतिक मूल्य प्रस्तुत किये है।

शब्द कुंजी – उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती, यौगन्धरायण, वसन्तक, स्वप्नवासवदत्तम्, चरित्र–चित्रण, नैतिक मूल्य, आदर्श।

1. उदयन – वत्सराज उदयन 'स्वप्नवासदत्तम्' नाटक के नायक है। उनमें नायक के सभी गुण विद्यमान है। नाटककार भास ने उदयन के निम्न चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डाला है –

(1) धीरललित नायक : वत्सराज उदयन कलाप्रिय, दर्शनीय और विलासप्रिय होने के कारण नाट्यशास्त्रीय परम्परा के अनुसार धीरललित नायक है।

दशरूपककार धनंजय के अनुसार, धीरललित नायक का लक्षण –

'निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः'

इस प्रकार उदयन धीरललित नायक है।

(2) रूपवान् : नाटककार भास ने उदयन का चित्रण सर्वांग सुन्दर, मधुर–भाषी, युवा सुशील तथा वीर नायक के रूप में किया है। चेटी इन्हें धनुष बाण के बिना साक्षात् कामदेव कहती है –

'ननु शरचापहीनः कामदेवः'

वत्सराज उदयन अत्यंत रूपवान् है। इनकी आकृति लुभावनी एवं दर्शनीय है। वत्सराज उदयन के अनुपम सौन्दर्य, अत्यधिक प्रेम तथा दया दाक्षिण्य आदि गुणों को देखकर ही मगध नरेश दर्शक की बहिन राजकुमारी पद्मावती रीझ जाती है।

(3) विविध गुण सम्पन्न : वत्सराज उदयन एक विविध गुण सम्पन्न व्यक्तित्व युक्त राजा है। उदयन में उच्च कुल के अनुरूप अनुपम सौन्दर्य, साहसी, वीर, कला प्रिय, वीणा वादन में कुशल, आदि अनेक गुण विद्यमान है।

(4) ललित कलाविद् : उदयन नय विनय में प्रवीण, ज्ञानवान्, ललित कलाविद् और वीणा वादन में कुशल है। वे ललित–कलाओं में मर्मज्ञ है और वीणा बजाने में अद्वितीय है। उनकी वीणा प्रवीणता पर मुग्ध होकर ही महाराज प्रद्योत ने अपनी पुत्री राजकुमारी वासवदत्ता को वीणा सिखाने हेतु आग्रह किया था।

(5) आदर्श पत्नीव्रत : वासवदत्ता के प्रति उदयन का असीम सच्चा प्रेम है। लावाणक ग्राम के अग्निकांड में वासवदत्ता के जल कर मरने की घटना पर वे स्वयं को भस्म करने हेतु दौड़ पड़ते है। उनका अपनी पत्नी वासवदत्ता के प्रति असीम प्रेम को देखकर लावाणक ग्राम से आया हुआ ब्रह्मचारी भी विह्वल होकर कहता है – वैसे तो ऐसे वियोग में चक्रवाक भी नहीं तड़पते है जैसे इस समय राजा उदयन तड़प रहे है। उनके समान अन्य कोई स्त्री से वियुक्त व्यक्ति भी नहीं दिखाई पड़ता –

'नैवेदानीं तादृशाश्चक्रवाका नैवाऽप्यन्ये स्त्रीविशेषैर्वियुक्ताः।
धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता भर्तृस्नेहात् सा हि
दग्धाऽप्यदग्धा।।'

वत्सराज उदयन रूपशील, माधुर्य, मधुर भाषी आदि गुणों से युक्त पद्मावती को पाकर भी प्राणप्रिया वासवदत्ता को नहीं भुला पाते है।

(6) वीर एवं साहसी : उदयन राजोचित गुणों से सम्पन्न एक वीर एवं श्रेष्ठ राजा है। मगध नरेश के कंचुकी के द्वारा युद्ध के लिए आह्वान करने पर वे शत्रु पर गरजते हुए युद्ध के लिए शीघ्र ही चले जाते है।

'उपेत्य नागेन्द्रतुरंगतीर्णे तमारुणिं दारुणकर्मदक्षम्।
विकीर्णबाणोग्रतरंगभंगे महार्णवाभे युधि नाशयामि ।।'

इस प्रकार वत्सराज उदयन के चरित्र में गुरुजनों के प्रति सम्मान, धैर्य, शौर्य, दया, ललित कलाओं में प्रवीणता, वीरता तथा पत्नी के प्रति असीम सच्चा प्रेम आदि गुणों का मनोरम समन्वय है।

2. वासवदत्ता – अवन्ति नरेश प्रद्योत की पुत्री और वत्सराज उदयन की प्रथम पत्नी वासवदत्ता 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की प्रधान नायिका हैं।

नाट्यशास्त्रीय नियमों के अनुसार, वह स्वीया नायिका है। नाटककार ने वासवदत्ता के निम्न चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डाला हैं –

(1) आदर्श पतिव्रता नारी : वासवदत्ता पतिव्रता एवं नि:स्वार्थ भाव पत्नी है जो अपने पति के लिए सर्वस्व बलिदान करने के लिए तत्पर रहती है। वासवदत्ता को 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में राजा उदयन की प्रिय पत्नी एवं अपने स्वामी के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाली पतिव्रता राजमहिषी के रूप में चित्रित किया गया है। वह अपने पति उदयन के हित के लिए यौगन्धरायण की योजना को बिना तर्क-वितर्क किए स्वीकार कर लेती है और अनेक कष्ट सहन करती है।

(2) स्वाभिमानिनी नारी : नाटककार ने वासवदत्ता का चित्रण एक स्वाभिमानिनी नारी के रूप मे किया है। वह एक स्वाभिमानिनी नारी है इसी कारण सेवकों द्वारा आश्रम से हटाये जाने पर वह खेद के साथ कहती है 'परिश्रम: परिखेदं नोत्पादयति यथायं परिभव:' संन्यासी वेशधारी यौगन्धरायण के साथ आश्रम में प्रविष्ट होती हैं, तो 'उत्सरत आर्या:! उत्सरत:' का आदेश सुनती है तो उस समय वह अपने को हटाये जाने की आंशका से स्वाभिमान को ठेस लगती देखकर तुरन्त प्रतिक्रिया स्वरूप यौगन्धरायण से प्रश्न कर बैठती है।

(3) गुण-ग्राह्या नारी : वासवदत्ता गुण-ग्राह्या नारी है। वह पद्मावती को देखकर के उसके रूप की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से करती हैं।

'अभिजनानुरूपं खल्वस्या रूपम्'

(4) कोमल हृदय नारी : वासवदत्ता हृदय से अत्यन्त कोमल है वह पद्मावती के प्रति सदैव स्नेहपूर्ण व्यवहार करती हैं। जब उसे पद्मावती के अस्वस्थ होने का समाचार पता चलता है तो वह तुरन्त समुद्गगृह में पहुंचती है और पद्मावती के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हैं।

इस प्रकार वासवदत्ता के चरित्र में पतिपरायणता, कुलीनता, उदारता, संयम तथा धैर्य आदि अनेक गुणो का अत्यन्त मनोरम मिश्रण देखने को मिलता है। अत: वासवदत्ता अपने रमणीय गुणों से वह नि:संदेह एक आदर्श रमणी है।

3. पद्मावती – नाटककार भास ने राजकुमारी पद्मावती का चरित्र-चित्रण एक आदर्श सपत्नी, अत्यंत सौन्दर्य युक्ता राजकुमारी, मधुर-भाषी, दानशीला, करुणाशील पात्र के रूप में किया है।

भास ने पद्मावती के निम्न चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डाला है –

(1) धर्मप्रिय एवं दानशीला : पद्मावती एक धर्मप्रिया एवं दानशीला राजकुमारी है। वह धार्मिक कार्यों में सहायता करना अपने कुल का धर्म मानती है। वह जब आश्रम में जाती है, तब वह घोषणा करवाती है कि जिसको जो चाहिए वह आकर प्राप्त कर ले। वस्त्र आदि सहर्ष दान देने के लिए तपस्वियों को आमंत्रित करती है।

(2) दृढ-प्रतिज्ञ : पद्मावती का नाटककार भास ने एक दृढ-प्रतिज्ञ राजकुमारी के रूप में चित्रण किया है। यौगन्धरायण की याचना स्वीकार कर लेने के बाद धरोहर की रक्षा करना कठिन कार्य होने के कारण भी वह उस कार्य से पीछे हटाना अनुचित मानती है।वह कंचुकी से स्पष्ट रूप से कहती है-

'आर्य प्रथममुद्घोष्य क: किमिच्छतीति अयुक्तमिदानीं विचारयितुम्'।

(3) अद्वितीय सौन्दर्ययुक्ता : पद्मावती अद्वितीय सौन्दर्यचुक्ता राजकुमारी है। उसके रूपसौन्दर्य को देखकर वासवदत्ता भी उसके प्रथम दर्शन में ही वासवदत्ता के मुख से अनायास ही निकालता है –

'अभिजनानुरूपं खल्वस्या रूपम्'

(4) ईर्ष्या-द्वेष रहिता : पद्मावती के हृदय में ईर्ष्या- द्वेष आदि दुर्गुण नहीं है। लता मंडप में उदयन के हृदय की बात जानकार वह वासवदत्ता और उदयन से ईर्ष्या नहीं करती है। वह दासी के द्वारा 'अदाक्षिण्य: खलु भर्ता' ऐसा कहने पर उसे डांटती है। वह सदा आवन्तिका (वासवदत्ता) के साथ सखी की तरह व्यवहार करती है फिर भी अंत में उसे वासवदत्ता के रूप में जानकार तत्काल क्षमा मांगती है।

(5) उदारमना : नाटककार भास ने पद्मावती को उदारमना नायिका के रूप में चित्रित किया है। पद्मावती उदारमना एवं विशाल हृदया है। वह तपोवन में उदार मन से दान देती है। वासवदत्ता के साथ भी वह हमेशा सखी जैसा व्यवहार करती है। विवाह के बाद वह वासवदत्ता के प्रति उदयन का प्रेम देखकर वह अन्य स्त्रियों की तरह दुखी नहीं होती है, और ना ही ईष्या करती है। प्रत्युत वह वासवदत्ता के लिए 'आर्या' शब्द का प्रयोग करती है, जो उसकी उदारता और महानता का परिचायक है।

इस प्रकार नाटककार भास ने बड़े मनोयोग से आदर्श सपत्नी के रूप में पद्मावती का चरित्र-चित्रण किया है। अनुपम सौन्दर्ययुक्ता, निरभिमानिता, कर्तव्यनिष्ठा, उदारमना, कुलीनता, शालीनता इत्यादि विविध गुणों से युक्त पद्मावती का अत्यंत उदात्ता चरित्र-चित्रण किया गया है जो भारतीय नारी के लिए एक आदर्श है।

4. यौगन्धरायण – स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में यौगन्धरायण का परिचय वत्सराज उदयन के प्रधान अमात्य के रूप में मिलाता है। नाटककर ने यौगन्धरायण की निम्न चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

(1) महान् कूटनीतिज्ञ : यौगन्धरायण एक महान् कूटनीतिज्ञ है। वासवदत्ता को छिपाकर रखना, राजा उदयन का पद्मावती के साथ विवाह कराना एवं मगध नरेश की सहायता से पुन: राज्य प्राप्त करना ये सब यौगन्धरायण की योजनाओं के ही मधुर परिणाम है। यौगन्धरायण के कूटनीतिक विचारों के कारण ही वत्सराज उदयन अपना राज्य पुन: प्राप्त कर पाते है।

(2) व्यवहार कुशल : यौगन्धरायण दूसरे के गुणों के पारखी है तथा गुणीजनों का सम्मान करने की उनमें अद्भुत प्रतिभा है। मंत्री रुमण्वान् के द्वरा किये गए कार्यों को सुनकर वह मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा करता है –

'अहो महद्भारमुद्वहती रुमण्वान्'

(3) दूरदर्शी : यौगन्धरायण अपनी दूरदर्शी सोच के द्वारा ही वासवदत्ता और स्वयं के जलकर मरने की झूठी खबर फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह करवा देता है। ताकि उदयन मगध नरेश की सहायता से अपना राज्य पुन: प्राप्त कर सके।

(4) स्वामिभक्त : यौगन्धरायण ऐसा स्वामिभक्त है जो अपने राजा और राज्य के कल्याण के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। वह आरम्भ से अंत तक राजा उदयन के लिए ही अनेक विपत्तियों को झेलता है।

इसी कारण उदयन भी मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा करते है-

' मिथ्योन्मादैश्च युद्धेश्च शास्त्रदृष्टैश्च मंत्रितै:।
भवद्यत्नै: खलु वयं मज्जमाना: समुद्धृता:।।'

(5) विचारशील : यौगन्धरायण बुद्धिमान् होने के साथ-साथ विचारवान् भी है। वह बड़ी चतुराई से व्याकुल वासवदत्ता को आश्वस्त करता है –

'चक्रार पंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति:'

(6) राज्य-हितैषी : यौगन्धरायण अपने मन, वचन और कर्मो से हमेशा

राज्यहित को सर्वोपरि रखता है। राजा उदयन के राज्य को शत्रु के द्वारा हस्तगत करने के बाद वह योजना बनाकर वापिस राज्य को प्राप्त करने में पूरा योगदान देता है। वह राज्यहित के लिए अनेक विपत्तियों को झेलता है। यौगन्धरायण के जीवन का लक्ष्य राज्यहित ही है।

इस प्रकार यौगन्धरायण स्वामिभक्त, सुयोग्य, सच्चरित्र, राज्य-हितैषी, विचारशील, बुद्धिमान्, दूरदर्शी एवं सफल राजनीतिज्ञ है।

5. वसन्तक – वसन्तक 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का विदूषक है। महाकवि भास के अन्य नाटकों के विदूषक की अपेक्षा यह स्वभाव से अधिक गम्भीर है।

वसन्तक के चारित्रिक गुण निम्न है –

(1) हास्यप्रिय : विदूषक हास्य प्रिय होता है । वसन्तक भी इस कार्य में अत्यन्त निपुण है। लता-मण्डप में पद्मावती की दासी के द्वारा भंवरे उड़ाये जाने पर वह व्याकुलता का अभिनय करते हुए कहता है –

'दास्या पुत्रैर्मधुकरैः पीडितोऽस्मि'

समुद्र-गृह में राजा को कहानी सुनाते समय वह लोगों को हँसाने के लिए ही जान-बूझकर राजा का नाम काम्पिल्य और नगर का नाम ब्रह्मदत्ता बताता है।

(2) बुद्धिमान् : वसन्तक विनोद प्रिय होने पर भी बुद्धिमान् है। वसन्तक देश और काल का भी पारखी है। लता-मण्डप में राजा के आँसू का कारण पूछने पर वह बहाना बनाकर पद्मावती से कहता है कि कास के फूल की धूल आँखों में पड़ने से आँसू आ गए। इस प्रकार वह अपनी बुद्धिमत्ता से उत्तर देता है।

(3) स्वामिभक्त : वसन्तक हृदय से राजा उदयन के प्रति स्वामिभक्त है। वह राजा के प्रत्येक महत्तवपूर्ण कार्य में सतर्कता पूर्वक सहायता करता है। उसमें शील, सौजन्य, सहानुभूति आदि गुण विद्यमान है। उसे स्वादिष्ट भोजन बहुत प्रिय है। वह राजा उदयन के हित के लिए हर संभव प्रयास करता है।

(4) व्यवहार कुशल : महाकवि भास ने वसन्तक को एक व्यवहार कुशल विदूषक के रूप में चित्रित किया है। वासवदत्ता और पद्मावती में कौन अधिक प्रिय है, ऐसा राजा के द्वारा पूछने पर वह बड़ी चतुराई से कहता है कि यद्यपि मान्या पद्मावती दर्शनीय, क्रोध रहित एवं मधुर-भाषिणी है तथा सभी लोगों पर समान अनुराग रखती है पर वासवदत्ता में एक और महान् गुण था कि वे स्वादिष्ट भोजन लेकर मुझे ढूंढा करती थी कि आर्य वसन्तक कहाँ गए। इस प्रकार वसन्तक अपनी व्यवहार कुशलता से दोनों को ही सम्मान देता है। इस प्रकार नाटककार ने वसन्तक का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है ।

निष्कर्ष – सारांशत: हम कह सकते है कि नाटककार भास 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण में पूर्णरूप से सफल हुए है। उन्होंने पात्रों के नैतिक आदर्श तथा उदात्ता गुणों का चित्रण बखूबी किया है । उनका चरित्र-चित्रण भारतीय मर्यादा तथा आदर्शों का यथार्थ चित्रण है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. स्वप्नवासवदत्तम्- डॉ. जगन्नाथ पाण्डेय ।
2. स्वप्नवासवदत्तम् – सी.आर. देवधर ।
3. स्वप्नवासवदत्तम् – शंकर राम शास्त्री ।
4. स्वप्नवासवदत्तम् – टी. गणपति शास्त्री ।
5. स्वप्नवासवदत्तम् – मैथिलीशरण गुप्त ।

****